

Satyavachan

Prog. No. 330

Acts. Introduction 1:1-3

प्रिय मित्रों, नमस्कार!

रुत की पुस्तक का हमारा अध्ययन समाप्त हो गया है और आज हम प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन आरंभ करने जा रहे हैं रुत की पुस्तक में हमने देखा था कि परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार एक कुटुम्बी छुड़ाने हारे ने रुत और उसी के वंश से हमारा छुड़ाने हारा प्रभु यीशु उत्पन्न हुआ वह मारा गया, गाढ़ा गाया, और फिर तीसरे दिन जी उठा, और अब प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम उसी छुड़ाने हारे प्रभु यीशु मसीह के कामों को देखेंगे, जो उसने पवित्र आत्मा के द्वारा, प्रेरितों के माध्यम से यरूश्लेम, यहूदा और सामरिया में और दुनिया के छोर तक किए

प्रेरितों के काम की पुस्तक को जिसे कभी-कभी पांचवां सुसमाचार भी कहा जाता है, यह लूका रचित सुसमाचार का ही एक भाग है इसका लेखक डॉ० लूका ही है जैसा कि वह पद 1 में उल्लेख करता है सर विलियम रेमसे ने लूका के लेखों का आलोचनात्मक अध्ययन किया, और कहा, कि प्राचीन हो या आधुनिक, लूका सबसे महान इतिहासकार था

प्रेरितों के काम की पुस्तक अनेक रूपों में असामान्य है यह पुस्तक सुसमाचार वृत्तान्त और पत्रियों का सेतु है प्रेरितों के काम की पुस्तक के बिना नये नियम में एक खाई दिखाई देती है जैसा कि डॉ० ह्यूस्टन ने कहा, “यदि प्रेरितों के काम की पुस्तक हट जाए तो उसका स्थान लेने योग्य अन्य कोई पुस्तक नहीं है” मति रचित सुसमाचार में यीशु मसीह के विषय में अन्तिम तथ्य यह है कि वह फिर जी उठा यही प्रेरितों के काम अध्याय में व्यक्त है मरकुस रचित सुसमाचार में यीशु की अन्तिम घटना है, स्वर्गारोहण यही प्रेरितों के काम अध्याय में दी गई है लूका रचित सुसमाचार में अन्तिम तथ्य है, पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा जिसका आगमन प्रेरितों के काम अध्याय में है यूहन्ना रचित सुसमाचार में अन्तिम तथ्य है मसीह का पुनः आगमन जो प्रेरितों के काम अध्याय में है ऐसा प्रतीत होता है कि चारों सुसमाचार लगाकर उण्डेले गए और

प्रेरितों के काम अध्याय एक के पात्र में भर गए चारों सुसमाचारों में जो महान सेवा का आदेश है वह भी प्रेरितों के काम की पुस्तक में पुष्ट किया गया है

प्रेरितों के काम की पुस्तक एक सीढ़ी बनाती है जिस पर पत्रियां रखी गई हैं इन्हें साथ-साथ पढ़ना ज्ञानवर्धक अनुभव है प्रेरितों के काम की पुस्तक कलिसियाओं की स्थापना का इतिहास देती है पत्रियां उन्हें लिखे गये निर्देश हैं

प्रेरितों के काम की पुस्तक कलिसिया के आरंभ का अभिलेख है— कलिसिया की उत्पत्ति का वर्णन, उत्पत्ति की पुस्तक आत्मिक निकाय की उत्पत्ति का लेखा प्रस्तुत करती है जिसे हम कलिसिया कहते हैं

प्रेरितों के काम की पुस्तक का विषय या कुंजी अध्याय-1 पद 8 है, “जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूषलेम और सारे यहूदिया और समरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे”

अतः इस पुस्तक का विभाजन इस पद के आधार पर ही किया गया है प्रथम सात अध्यायों में पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरितों के माध्यम से प्रभु यीशु मसीह के यरूषलेम के कार्यों का वर्णन है और 8-12 अध्यायों में प्रभु यीशु मसीह के कार्य जो उसने पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरितों के माध्यम से यहूदा और समरिया में किए और पेश भाग पृथ्वी के छोर तक किए गए प्रेरितों है जो प्रभु यीशु मसीह ने पवित्र आत्मा के द्वारा किए

प्रेरितों के काम की पुस्तक पूरी नहीं है इसका अन्त पौलुस के किराए के घर के साथ ही हो जाता हो जाता है जो उसने रोम में लिया था इसका अन्त पूर्ण नहीं है क्यों? क्योंकि यह पुस्तक एक अनन्त कहानी है संभव है कि प्रभु के पास डा० अब भी प्रेरितों के काम की पुस्तक लिख रहे हैं हो सकता है कि वह आपके और मेरे कामों का लेखा लिख रहे है जो हम पवित्र आत्मा की सहायता से आज कर रहे हैं यही मेरी आशा है

प्रेरितों के काम की पुस्तक के कुछ विशेष गुण:

1. **प्रभु यीशु मसीह की प्रधानता।** प्रभु यीशु पृथ्वी को छोड़ कर स्वर्ग में चला गया है पहले अध्याय में उसके स्वर्गारोहण का उल्लेख है परन्तु वह अब भी कार्य रहा है उसने केवल स्थान बदला है या कहीं मुख्यालय बदल लिया है इस पृथ्वी पर उसका मुख्यालय कफरनहूम में था अब उसका

मुख्यालय पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ हैं प्रभु यीशु मसीह प्रधान हैं वह स्वर्ग में सुविधाजनक स्थान से कार्य कर रहा हैं

2. **पवित्र आत्मा की प्रधानता।** मसीह ने पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा की यह प्रतिज्ञा यूहन्ना रचित सुसमाचार में चार बार की गई हैं—(यूहन्ना 1:33, 7:37–39, 14:16–17, 20–22) यही प्रतिज्ञा प्रेरितों के काम की पुस्तक 1:8 में दी गई हैं आप और मैं पवित्र आत्मा के युग में वास कर रहे हैं इस युग का महान तथ्य है विष्वासियों में पवित्र आत्मा का अन्तर्वास
3. **कलिसिया का सामर्थ्य।** कलिसिया में सामर्थ्य भरा हुआ है और निःसन्देह यह परमेश्वर के आत्मा का काम है परन्तु आज कलिसियाओं में आरंभिक कलिसिया का सामर्थ्य प्रगट नहीं हैं क्यों? क्योंकि आरंभिक कलिसियाएँ ऊँचे आत्मिक स्तर पर थीं जो तब से आज तक किसी भी युग में प्राप्त नहीं किया गया हैं तथापि यह पवित्र आत्मा ही है जो कार्य करता है जब किसी भी आराधना में प्रभु यीशु मसीह की महिमा और सम्मान होता हैं
4. **प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कलिसिया की प्रधानता।** कलिसिया एक नई संख्या हैं इसका आरंभ प्रेरितों के काम की पुस्तक से ही हुआ हैं
5. **स्थानों की प्रधानता।** पुस्तक का आरंभ यरुषलेम से होता है और रेत में अन्त होता हैं सर विलियम रामसे ने डा० लूका द्वारा वर्णन किये गए एक स्थान का निरीक्षण किया और उन्हें यथोचित पायां
6. **व्यक्तियों की प्रधानता।** डा० लूका 110 व्यक्तियों के नाम लिखते हैं, जिसमें जनसमूह का उल्लेख अलग हैं मेरे विचार में प्रथम शताब्दी के अन्त तक संसार में लाखों विष्वासी थे इन प्रथम दो या तीन सौ वर्षों में कलिसिया का विकास असीमित था परन्तु आज हमारा विकास कम हो गया हैं जैसा कि प्रभु कह चुका थां
7. **पुनरुत्थान की प्रधानता।** पुनरुत्थान सुसमाचार प्रचार का केन्द्र हैं आज अधिकांश कलिसियाओं में पुनरुत्थान का प्रचार वर्ष में एक बार, ईस्टर रविवार पर होता हैं जब मैं कलिसिया का पासबान था तब मैंने कई बार अगस्त के महिने में ईस्टर सन्देश सुनाया तो वे जानने आए की

पासबान को क्या हो गया हैं उन्होंने सोचा कि मुझ गर्मी का कुप्रभाव पड़ रहा था जबकि आरंभिक कलीसिया में मसीह यीशु का पुनरुत्थान कलीसिया और सन्देश का केन्द्र था उसके बिना प्रचार नहीं किया जाता था पेन्तिकुस्त के दिन पतरस के प्रचार विशय था मसीह यीशु का पुनरुत्थान उसने कहा कि उस दिन जो हो रहा था उसका मुख्य कारण था कि मसीह यीशु पिता परमेश्वर के दाहिने और स्वर्ग में है और उसने अपना पवित्र आत्मा संसार में भेज दिया हैं यह सब पुनरुत्थान के कारण ही हो रहा था आप देखेंगे कि पौलुस के प्रचार का केन्द्र भी पुनरुत्थान ही था

अनेक मनुश्य, यहां तक कि प्रचारक भी नाना प्रकार के वरदानों पर निर्भर करना चाहते हैं अतः मैं आपको एक वरदान सुझाता हूँ—मसीह यीशु का पुनरुत्थान आरंभिक कलीसिया में प्रत्येक रविवार ईस्टर होता था, पुनरुत्थान की घोशणा का दिन “वह जी उठा हैं” सब जगह पुकारा जाता था — देखिये मति 27:64

8. पुस्तक के प्रथम भाग में पतरस और अन्तिम भाग में पौलुस की प्रधानता दर्शायी गई हैं। अन्य प्रेरितों का नाम नहीं लिया गया हैं मेरे विचार में इन दो पुरुशों की सेवा पर विषेश ध्यान देने में परमेश्वर के पास अति उचित कारण ही रहे होंगे

इसका मानवीय कारण भी हैं मेरे विष्वास में डॉ० लूका इन दोनों की सेवा से परिचित थे वह पौलुस के सहायक भी थे कुछ लोगों का विचार है कि पतरस और पौलुस में मतभेद था स्पष्ट कहूँ तो मेरे विचार में लूका पतरस और पौलुस सदैव ही अच्छे संबन्धों में नहीं थे और अधिक बातें नहीं करते थे

इस ऐतिहासिक पुस्तक का सही नाम रखना सदा ही समस्या रहा हैं हमारी बाइबल में इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक कहा गया हैं रॉबर्टलीने इसे “स्वर्गवासी एवं महिमापूर्ण प्रभु के काम” कहा हैं बिन्दू धीर्शक हैं “कार्यों का वचन”

मेरे विचार में इसकी कुंजी हमें अध्याय 1 के पहले दो पदों में दी गई हैं, इसके आधार पर मैं कहूँगा, “आत्मा के द्वारा प्रेरितों के माध्यम से प्रभु यीशु मसीह के काम”

अध्याय — 1

विशय: पवित्र आत्मा के आगमन की तैयारी

जैसा मैंने प्रस्तावना में कहा था, मेरे विचार में इस पुस्तक का शीर्षक होना चाहिये “पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरितों के माध्यम से मसीह यीशु के काम” पहले सात अध्ययन मसीह यीशु के कार्यों को प्रकट करते हैं जो उसने यरूषलेम में पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरितों के माध्यम से किए पहला अध्ययन पवित्र आत्मा के आगमन की तैयारी का है जिसमें संक्षिप्त प्रस्तावना है और यीशु के पुनरुत्थान के पश्चात् चालीस दिनों का विवरण, उसका स्वर्गारोहण और पुनः आने की प्रतिज्ञा है, तदोपरान्त पवित्र आत्मा के लिए प्रेरितों की प्रतीक्षा तथा यहूदा के स्थान पर एक नये प्रेरित का चुनाव

प्रस्तावना

प्रेरितों के काम 1:1-2

“पहली पुस्तिका,” लूका रचित सुसमाचार भी थियुफिलुस को भेजा गया था थियुफिलुस का अर्थ है “परमेश्वर का प्रेमी” मैं इस विचार से सहमत नहीं कि यहां थियुफिलुस का अर्थ है कोई भी प्रेमी यह तो स्पष्ट है कि लूका का एक परिचित जन थियुफिलुस था और उसका नाम उचित ही था कि वह परमेश्वर का प्रेमी था लूका रचित सुसमाचार में वे सब बातें हैं जो यीशु आरंभ से करता और सिखाता रहा और प्रेरितों के काम की पुस्तक में वह अब भी कर रहा है और सिखा रहा है वह आज भी कर रहा है और सिखा रहा है और मैं तो कहूंगा कि वह इस कार्य को तब तक करता रहेगा जब तक कि वह अपनों को इस संसार से उठा न लें

“उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया” इससे स्पष्ट होता है कि क्योंकि यीशु स्वर्ग में उठा लिया गया तो उसने शिक्षा देना बन्द नहीं की परन्तु अब अधिक सुलभ स्थान, परमेश्वर के दाहिने हाथ से वह पवित्र आत्मा के द्वारा काम करता है जिस प्रकार सेना में आज्ञाएं ऊपर से नीचे की ओं चलती हैं उसी प्रकार प्रभु यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा काम करता है पवित्र आत्मा प्रेरितों के माध्यम से और आज हमारे अपने-अपने स्थानों में आपके और मेरे द्वारा काम करता है यह एक असाधारण कथन है

पुनरुत्थान के बाद यीशु की चालीस दिवसीय सेवा

डॉ० लूका यहां अपने नियतकालिक वाक्यों में से एक का उपयोग करता है तो पद 4 तक चलता है

प्रेरितों के काम 1:3

कश्टों और मृत्यु के पश्चात् यीशु ने अनेक अचूक प्रमाणों द्वारा अपने आप को जीवित प्रकट किया। पुनरुत्थान के पश्चात् यीशु के दस प्रकटीकरण व्यक्त किए गए हैं उसके पुनरुत्थान के पश्चात् की सेवा जो उसके प्रकटीकरण में व्यक्त हैं आज विष्वासियों के जीवन पर सुसमाचार में विहित उसकी तीन वर्षीय सेवा से अधिक प्रभाव डालती हैं मेरे पास एक छोटी पुस्तक है जिसका नाम "एमटीटूम्ब" अर्थात् खाली कब्र है इस पुस्तक में उसके पुनरुत्थान पश्चात् की सेवा का वर्णन है 2कुरिन्थियों 5:16 में पौलुस ने लिखा, "अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे यद्यपि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उसको ऐसा न जानेंगे"

आज आप और मैं उसे ऐसा नहीं जानते हैं जैसा वह 2000 वर्ष पूर्व पृथ्वी पर विचरण करता था हम उसे एक महिमामय मनुष्य के रूप में जानते हैं वह इस पल स्वर्ग में है और वह वास्तव में है कलीसिया प्रायः इस तथ्य को अनदेखा करती है

अभी हाल ही में मुझे एक व्यक्ति का पत्र प्राप्त हुआ जिसका कहना था कि वह आजीवन कलीसिया का सदस्य रहा है उसने सब निर्धारित संस्कार पूरे किए हैं और उसे विष्वास था कि वह एक विष्वासी है परन्तु वचन सुन कर उसे बोध हुआ कि वह मसीह यीशु को नहीं जानता था उसकी अविष्वासनीय खोज थी कि यीशु 2000 वर्ष पूर्व ही पृथ्वी नहीं रहा वह आज भी जीवित है और परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है वह जीवित प्रभु के पास आया और उसे ग्रहण किया कैसी अद्भुत बात है यीशु ने अपने आप को अनेक अचूक प्रमाणों द्वारा प्रकट किया

आज अविष्वासियों की समस्या तथ्य नहीं उनका अविष्वास है तथ्य तो है ही क्या नेपोलियन था? जी हाँ क्या उसने वाटरलू का युद्ध किया? जी हाँ मेरे पास इसके प्रमाण इतने नहीं जितने यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के हैं सच तो यह है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के प्रमाण इससे दस हजार गुणा अधिक हैं फिर भी आज लोगों का कहना है कि वे यीशु के पुनरुत्थान में विष्वास नहीं करते हैं समस्या कहाँ है! समस्या है अविष्वासी मन मनुष्य में आदम की स्वभाविक मानसिकता है कि परमेश्वर से दूर भागें मनुष्य परमेश्वर से मुँह मोड़ लेता है यदि आप विष्वास नहीं करते तो समस्या आपके साथ है, परमेश्वर के वचन के साथ नहीं है उसने तो अनेक अचूक प्रमाण द्वारा स्वयं को जीवित सिद्ध कर दिया है यदि आप में सच्ची जिज्ञासा हो तो आप जान सकते हैं समस्या तो यह है कि आप जानना नहीं चाहते हैं समस्या आपके मस्तिक की नहीं आपकी इच्छा की है

मुझे पुनरुत्थान के बारे में कुछ कहने की अनुमति दें मेरे विचार में यूहन्ना अध्याय 12 पद 32 को विकृत कर दिया गया है, "मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खिचूंगा" वह ऊँचे पर कैसे चढ़ाया गया? वह पुनरुत्थान में ऊँचे पर चढ़ाया गया था, मेरे मित्रों वह मृतकों में से ऊँचा उठाया गया था यह शुभ सन्देश है चाहे आप यीशु के बारे में कुछ भी कहें या उसे कैसा भी आकर्शक कहे, सन्देश यही है कि वह मृतकों में से ऊँचा उठाया गया वह जी उठा है बहुत लोग यीशु की ओर आकर्षित नहीं हो रहे हैं क्योंकि पुनरुत्थित मसीह का प्रचार नहीं किया जा रहा है प्रेरितों के काम की पुस्तक, देखिए, मसीह यीशु के पुनरुत्थान पर कैसा बल देती है